The Opinion, Vol. 5, No. 10, July-December, 2016 **ISSN : 2277-9124**

वर्तमान युवाओं में मद्यपान की समस्याएँ

डॉ0 किशोर उत्तमराव राऊत*

भारतीय समाजव्यवस्था के वर्तमान स्थिती में जो समस्याॅऐं है उसमे मद्यपान (Alcoholism) प्रमुख है। विशेषतः युवा वर्ग मे मद्यपान की समस्या बडी मात्रा में पाई जाती है। स्कुल एवं कॉलेजों के छात्र, छात्राओं मे मद्यपान करने वालों की संख्या अधिक है । मद्यपान करना यह आधुनिक काल की फॅशन है। युवा एवं छात्रों मे एकसाथ रहने समय उन्हीं के आदतो करना पडता है नही तो आपकों ग्रृप से अलग कर दिया जाता है। यह चित्र नगर में पाये जाते है। मद्यपान यह आमतौर पर व्यक्तीगत स्थिती है। लढने से पारिवारिक बाद में सामाजिक रूप धारण करती है।

मद्यपान यह प्राचीन एवं पारंपारिक काल से ही दिखाई देते ही। राजे महाराजों में मद्यपान एव मदिरा का प्रयोग बडी मात्रा मे होती थी। सभा, सम्मेंलनो एवं मेहमानों के साथ मदिरा का प्रयोग किया जाता था। फिर भी मद्यपान की समस्या उतनी नही थी जितनी वर्तमान काल में दिखाई देती है। इस समस्याॅ हजारो युवाओं–छात्राओं मे दिखाई देती है। इस शोध निबंध में वर्तमान युवाओं मे मद्यपान की समस्याॅ, उनकी पारिवारिक एवं सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा आदि मुद्यो का प्रमुखता से विश्लेषण किया है।

उद्देश्य

इस शोध निबंध में निम्नलिखित उद्देशो का अंतर्भाव किया है।

1. युवाओं की पारिवारिक एव सामाजिक स्थिती का अध्ययन करता।
2. युवाओं मे मद्यपान की समस्याॅ के कारणो का अध्ययन करना।
3. मद्यपान समस्या के सुझाव देना।

इन उद्देशो को लेकर इस शोध में अध्ययन किया है। इसमें द्वितीय स्त्रोतो का इस्तेमाल किया है। युवा छात्रो संबंधी मद्यपान की स्थिती का अध्ययन वस्तुनिष्ठता से किया है।

मद्यपान की परिभाषा

मद्यपान यह जब तक एक व्यक्तीमत्व सिमित है तब तक उसको व्यक्तीगत रूप से देखा जाता है। परंतु मद्यपान की स्थिती पारिवारिक एवं सामाजिकता को बिगाड देती है। उसके बाद वह सामाजिक रूप लेती है। आज की स्थिती मे मद्यपान की समस्या, तीव्रगती से बढती जा रही है। नगरों एवं महामार्गो में, होटलो की संख्या देखते यह लगता है कि मद्यपान की समस्याॅने जनसमुदाय का रूप धारण किया है।

मद्यपान की संबंधी अनेक अभ्यासको ने अपने अपने विचार रखे है, उसमें जॉन्सन लिखते है की, 'मद्यपता' या मद्यपान यह (Alcoholism) स्थिती है जिसमें एक व्यक्ती मदिरा लेने की मात्रा पर नियंत्रण खो बैठता है। जिसमें की वह पीना आरम्भ करने के पश्चात उसे बाद करने में सदैव समर्थ रहता है।' (जॉन्सन 1973 519) एक बार मद्यपान की आदत लग जाती है तो उसे छोडने मे असम्भव हो जाता है। वेलर एव एक्फ्रोन के अनुसार मद्यपान का लक्षण मदिरा का इस सीमा तक बार बार पीता है जो की इसके प्रथागत उपयोग या समाज के सामाजिक रिवाजों के अनुपालन से अधिक है और जो पीनेवाले के स्वास्थ या उसके सामाजिक अथवा आर्थिक कार्ये करने को प्रभावीत करता है। (वेलर एव एम्फ्रान 1955 : 619 –644) इन परिभाषा का उल्लेख राम आहुजाने अपनी 'सामाजिक समस्याऐ' यह पुस्तक में की है। साथ ही वाल्डर सी वेकलेस ने 'दि क्राईम प्राब्लेम्स' मे लिखा है, 'ऐसा व्यक्ती जो मद्यपान का व्यसनी नही है, नशे की हालत मे अवरोध एवं आत्मसंयम के अनुरूप अपने व्यवहार के अपराधिक दायित्व नशे के कारण उत्पन्न परेशानी एवं समस्याओं के दायित्व, को समझाता है और उन्हे नियंत्रित करता है। किन्तु एक व्यसनी शराबी इसी प्रकार की अनेक परेशानियो एव समस्याओं को उत्पन्न करके अपराधिक एवं अवैधानिक व्यवहार मे सलंग्न हो सकता है। (रेकलेस 1971 : 186) इसी के साथ विश्लेषण डॉ. गणेश

* समाजशास्त्र विभाग, संत गाडगे बाबा अमरावती विद्यापीठ, अमरावती

पाण्डे एवं अरूणा पाण्डेय ने अपनी नगरीय समाजशास्त्र मे किया है। मद्यपान यह एक व्यक्तीगत स्थिती होते हुये भी उसका परिवार एवं समाज पर गहरा असर पडता है।

मद्यपान की समस्याएँ

मद्यपान की समस्या वर्तमान युवा एव छात्रो में बडी मात्रा मे बढ रही है। ऐसा कहा जाता है की भारत मे 20–25 प्रतिशत लोग मदिरापन करनेवाले या शराबी है। वर्तमान स्थिती में भारत में शराब की विक्री 20–25 गुणा बढ गई है। राज्यों एवं देश मे सभी जगह स्थिती शराब के संदर्भ में एक समान है । शासन अपनी स्तरोपर मद्यपान एवं शराब को कमी करने का प्रयास करती है। फिर भी यह समस्या बढती रहती है। राम आहुजा (2000: 369) लिखते है कि, 'मदिरा पीने वाले की पीने की आवृत्ती पाच प्रकार का वर्गीकरण किया है।

1. बिरल (rare) प्रयोक्ता, जो एक वर्ष मे एक या दो बार पीत है।
2. अनित्य (infrequent) प्रयोक्ता, जो दो तीन महिनो मे एक या दो बार पीते है।
3. हल्का (light) प्रयोक्ता जो एक महिने मे एक या दो बार पीते है।
4. मध्यम (moderate) प्रयोक्ता जो एक महिने मे तीन या चार बार पीते है।
5. भारी (heavy) प्रयोक्ता जो प्रतिदिन या दिन मे कई बार पीते है।

वर्तमान स्थिती में शराब की बिक्री बढती दिखाई देती है। प्रतिदीन या महीनो पीने की संख्या एवं शराब पीने की संख्या जैसे दिल्ली, मुंबई, चैन्नई, कलकत्ता आदि बडे नगरो के साथ ही सभी नगरों मे यह संख्या बढती नजर आती है।

मद्यपान या शराब के कारण देश के राज्यों मे टॅक्स रेव्हेन्यु निम्नलिखित है।

अ.क्र.	राज्य	टॅक्स रेव्हेन्यु
1	महाराष्ट्र	4518
2	आंधप्रदेश	3234
3	उत्तर प्रदेश	2964
4	तामिलनाडू	2734
5	कर्नाटक	2526
6	गुजरात	1796
7	पश्चिम बंगाल	1699
8	राजस्थान	1507
9	केरळ	1382
10	हरियाना	1363
11	मध्य प्रदेश	1272
12	पंजाब	1180
13	छत्तीसगढ	724
14	झारखंड	707

15	उडीसा	662
16	बिहार	370
17	जम्मू काश्मिर	346
18	आसाम	322
19	उत्तराखंड	322
20	हिमाचल प्रदेश	274
21	गेवा	233
22	त्रिपुरा	47.25
23	मेघालय	45.92
24	अरूणाचल प्रदेश	27.11
25	मनिपूर	26.85
26	नागालॅड	17.76
27	मिझोरम	15.47
28	सिक्कीम	15.64

राज्य एवं केंद्र सरकारो के इतनी बडी मात्रा में टॅक्स मिलता है तो यह शराब की दुकाने बंद नही करती। इतना ही नही विज्ञापन एवं माध्यमोंद्वारा बढावा मिलता है।

मद्यपान समस्याके कारण

मद्यपान के अलग अलग कारणो का विशदीकरण किया जाता है। उसमें गणेश पाण्डेय एव अरूणा पाण्डेय इन्होंने 'नगरीय समाजशास्त्र' (2004–299–303) मे दिया हुये कारण निम्नलिखत

1) वंशानुगत परम्परा 2) मानसिक तणाव
3) व्यावसायिक कारण 4) अज्ञानता
5) कुशालता मे वृध्दीलाना 6) मित्रता और मजाक
7) यौन विषयक निराशा 8) व्यापार मे अचानक अप्रत्याक्षिक लाभ या हानी
9) जीवन क दायित्व मे पलायन 10) औद्योगिक एवं नागरीकरण
11) नौकरी की प्रकृति 12) सामाजिक अपर्याप्ता एवं कठीनाईयॉ
13) सामाजिक प्रतिष्ठा 14) गन्दी बस्तीयॉ
15) राजनैतिक 16) आकस्मीक संकट
17) औषधी 18) आनंदी प्राप्त के लिए
19) नैतिक ऱ्हास 20) सामाजिक धार्मिक उत्सव
21) रोमांचक अनुभव

आदि कारणों का उल्लेख अभ्यासकोने किया है। जिनके आधार पर मद्यपान या शराब के समस्यॉओ कारण बताये जाते है। इन युवा वर्ग में यह कारण दिखाई देते है।

मद्यपान के प्रभाव

मद्यपान के प्रभाव बहुत है। उसमें वैयक्तिक हानी बडी मात्रा से होती है। व्यक्तीगत एवं पारिवार का बजट बिघडता है, उसके कारण आर्थिक संकट पैदा होता है। स्वास्थ खराब होता है। दुर्घटना, आत्महत्या, अपराध, चिन्ता आदि। उसमें परिवार के अन्य सदस्यों पर बडा गहरा असर पडता है। जैसे – बच्चो की देखभाल, उनकी शिक्षा, खान पान मे कमी, आर्थिक बजट आदि समस्याओं का सामना करना पडता है।

मद्यपान के प्रभाव व्यक्ती के हर क्षेत्र मे पडता है। पारिवारिक या सामाजिक प्रतिष्ठा बिगडती है। लोगों का नजरीया अलग होता है। स्वास्थ बिगडता है जैसे मुहॅ, गाले, फेफडो का कॅन्सर बढता है। ब्लड प्रेशर, अल्सर, यकृत रोग आदि कारणों मे नशा महत्वपूर्ण कारण है। यह स्थिती युवा वर्ग में बढती नजर आती है।

मद्यपान की समस्या संबंधी सुझाव

मद्यपान एक बडी समस्या है। उसके कम या खत्म करने के लिए कुछ मुद्यो की चर्चा की जाती है। फिर भी निम्नलिखित सुझाव दिये जाते है।

1. सरकारी धोरण मे बदलाव आना जरूरी है। अपने विज्ञापनो मे बंदी होना आवश्यक है।
2. सार्वजनिक स्थानों जैसे स्कुल, होटलो मे मद्यपान पर रोक लगाना चाहिये।
3. शराब के विरूध्द योजनाबध्द तरीके से प्रचार करना चाहिये।
4. सरकारी स्तरों पर अपने कर्मचारी पर बंदी हो।
5. स्कुल, कॉलेज, विश्वविद्यालये, धार्मिक स्थलों के पास शराब की दुकान नही होना चाहिए ।
6. मद्यपान की नई दुकानपर रोक लगाना चाहिए।
7. शिक्षा के क्षेत्र मे मद्यपान या शराब बंदी का अधिक प्रचार करना चाहिये।
8. पुलिस प्रशासन प्रभावशाली काम करना चाहिये।
9. मद्यपान की समस्या को खत्म करने के लिए समाज के हर घटकों को सम्मिलित चयन किया जाय ।
10. युवा एवं छात्राओं को विशेष जिम्मेदारी दि जाये।

संक्षेप

मद्यपान की समस्या युवाओं मे बडी मात्रा से दिखाई पडती है। देश या राज्य में हर क्षेत्र मे शराब की दुकान एवं पिनेवाले दिखाई पडते है। अपने देश में हर साल मद्यपान की विक्री 20–25 गुणा बढ रही है। मद्यपान के कारण बहुत समस्या का सामना इन लोगों को करना पड रहा है। जैसे व्यक्तीगत पारिवारीक, सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा आदि। शराब की आदतो से व्यक्ती की जिंदगी खत्म होती है। इन सभी परिस्थितीया को देखते सरकार की तरफ से कडी से कडी योजनाये एवं कार्यक्रमो का निर्माण करके कठोर अंमल होना जरूरी है। इतना ही नही सभी लोगों ने इसमें प्रयास करने के जरूरी है। विशेष तौर पर स्कुल, कॉलेजो, एवं विश्वविद्यालयों मे मद्यपान बंदी या शराब बंदी के उपक्रम या कार्यक्रम करने चाहिये। जिसके कारण यह समस्या खत्म होगी। बच्चों के माता–पिता या बुजुर्गो ने अपनी मद्यपान की आदते छोडकर अपने बच्चों या परिवार का ख्याल सही तरिके से रखना चाहिये। सभी उपायों का सही मायने में अमल करने के बाद मद्यपान या शराब की समस्या दूर करने में मदत होंगी।

संदर्भ :

1- Johnson, Elmer H. "Social Problems of Urban Man, the Dorsey Press Homewood, Illinois 1973 pp. 519.
2. Keller Mark & Nera Efron, "The Prevalence of Alcoholism Quarterly Journal of Studies on Alcohol December, 19955.
3. आहुजा राम (2000) सामाजिक समस्याऐ, रावत पब्लिकेशन, जयपूर, पृ.368.
4- https://en.wikipedia.org/wiki/state of India by tax revenues.
5. पाण्डेय गणेश एवं पाण्डेय अरूणा (2004) नगरीय समस्याशास्त्र राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली. पृ. 299–303.